ISSN 2394-5303

Issue-75, Vol-03, April 2021

Printing Area

International Peer Reviewed Multilingual Research Journal

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with CamScanner

40) यौन शिक्षा और सहज भारतीय यौन वैविध्य की भीम कहानियाँ
डॉ. जयेश एल. व्यास, राजकोट ||186

41) हिन्दी के अनभिज्ञ कथाकारों की रचनाओं में प्रवासी जीवन
डॉ. नजमा एम. अंसारी, जामनगर ||192

42) सुधा अरोड़ा के साहित्य में चित्रित नारी
डॉ. जयलक्ष्मी एफ.पाटील, धारवाड ||196

43) भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं में मानवतावाद
डॉ. परमार भानु एम.,राजकोट ||199

44) पद्धतियाँ और तकनीक – प्राचीन एवं अर्वाचीन
डॉ.रूपाली दिखावल, प्रो.समीक्षा सोनी, उज्जैन ||203

45) म.गांधी यांच्या स्वराज्याच्या संकल्पनेतून प्रतिबिंबित होणारे राजकीय विचार
श्री. शिवतेज संभाजीराव भोसले ||205

46) संत तुकाराम महाराजांचे समतेविषयक विचार
डॉ.एम.पी.खेडेकर ||207

47) भारत आणि अमेरिका यांच्यातील सर्वसमावेशक जागतिक भागीदारी
डॉ.शरद मधुकर कुळकर्णी, नगाव ||212

48) मराठी भाषा विषयातील संशोधनासाठी वापरण्यात येणारी संशोधन पद्धती
श्री. हनुमान भरत सांगळे ||216

49) समकालीन हिंदी ग़ज़ल में स्त्री विमर्श
प्रो.रजनी शिखरे ||218

50) History of Women in Bengali Literature .....
Dr. Banabina Brahma ||219

51) CORPORATE CRIMINAL LIABILITY IN INDIA : A CHRONOLOGICAL ......
Ms. Deepika Srivastava, Dr. Anjali Mittal, Meerut (U.P.) ||222

52) दहशतवाद आणि मानवी सुरक्षिततेचा प्रश्न
डॉ.शंकर लक्ष्मण सावरगावकर ||230

53) सावकर सुनेगारी
प्रा. डॉ. मीना बोर्डे-सूर्यवंशी ||233

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

49

समकालीन हिंदी ग़ज़ल में स्त्री विमर्श

प्रो.रजनी शिखरे
प्रधानाचार्य एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
र.भ.अट्टल महाविद्यालय गेवराई
जि.बीड (महाराष्ट्र)

****

गज़ल विधा की लोकप्रियता सर्वविदित है। इसलिए उर्दू गज़ल ने भारतीय समाज को प्रभावित किया है। यह प्रभाव केवल उर्दू भाषा एवं उर्दू भाषियों तक सीमित नहीं रहा है। बल्कि उर्दू गज़ल ने भारतीय भाषाओं को भी प्रभावित किया है। इस प्रभाव के कारण ही मराठी, पंजाबी, गुजराती, उड़िया, हिंदी आदि भाषाओं में गज़ल लेखन शुरू हुआ। मराठी के प्रसिद्ध गज़लकार सुरेश भट और हिंदी गज़ल सम्राट दुष्यंतकुमार ने गज़ल को नई दिशा देकर उसे लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचाने का सफल प्रयास किया है।

दुष्यंतकुमार ने हिंदी काव्य परंपरा के अनुरूप गज़ल को ढालकर वर्तमान समसामयिकता को अपने अल्फ़ाज़ों में अभिव्यक्त करने की सफल एवं सार्थक कोशिश की है। समकालीन हिंदी गज़ल ने राजनीतिक विकृतियों एवं विडंबनाओं के साथ समाज के उपेक्षित, शोषित घटकों की पीड़ा को अभिव्यक्त कर विद्रोह का एक सशक्त रूप लिया है।

उर्दू गज़ल परंपरा के अनुरूप समकालीन हिंदी गज़लकारों ने स्त्री के हुस्न और इश्क का चित्रण न कर उसके दुःख-दर्द को वाणी देने का सफल प्रयास किया है। सृजन की अनुगामिनी धरती की सृजनकार और सहनशीलता की मूर्ति स्त्री जीवन की समस्याओं को हिंदी गज़लकारों ने अभिव्यक्त किया है।

भारतीय समाजव्यवस्था पर पुरुषप्रधान व्यवस्था के वर्चस्व के कारण स्त्री सदियों से उपेक्षित रही है। हमारे देश में वर्तमान समय में कन्या भ्रूण हत्या की समस्या उग्र रूप धारण किए हुई है। गज़लकार चंद्रसेन विराट जी इन समस्याओं को अपनी गज़ल के माध्यम से व्यक्त करते हैं। हम लड़कों को फूल मानते हैं। फूल को जन्म देनेवाली कलियों को ही मसलने से फूलों का वंश कैसे बढ़ेगा? यह सवाल चंद्रसेन विराट जी उपस्थित करते हैं। देखो उन्हीं के शब्दों में -

"वंश फूलों का बढ़ेगा कैसे
आप कलियों को मसल देते है।"१

भारतीय समाज में बालविवाह और अनमेल विवाह की विकृतियाँ देखने को मिलती है। स्त्री का विवाह जल्दी करने वाले समाज में स्त्री के दुःख, दर्द को व्यक्त करने की कोशिश भी चंद्रसेन विराट ने की है। विराट जी अनमेल विवाह तथा बालविधवा की समस्याओं से हमें रू-ब-रू कराते हैं। बालविधवा की वेदना और उसकी संघर्षशीलता को लेकर चंद्रसेन विराट कहते हैं -

"प्रौढ़ होकर भी विवाहित हो न पाये सुख मगर
बाल विधवा वेदनाओं का वरण होता गया।"२

इसी तरह पुलिस एवं न्यायव्यवस्था स्त्री की मदद करने की अपेक्षा उस अबला पर अन्याय एवं अत्याचार करती हुई दिखाई देती है-

"तरुण विधवा बहन को शाम थाने पर बुलाया है
दरोगा दे रहा धमकी, हमें क्या फरक पड़ता है।"३

दहेज प्रथा से स्त्री सदियों से पीड़ित है। परंतु इस समस्या के खिलाफ कोई आवाज नहीं उठाता। डॉ. उर्मिलेश जी इस समस्या को व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि दहेज के कारण अपनी पत्नी को छोड़ देनेवाले इस पुरुष प्रधान व्यवस्था के अन्याय - अत्याचार को समाप्त करना समय की जरूरत है। उन्हीं के शब्दों में देखिए -

एक स्कूटर शादी में न मिला तो यों हुआ
कल ही एक राजा ने यारों अपनी रानी छोड़ दी।"४

इतना ही नहीं लाखों रुपये दहेज देकर जो वर खरीदा जाता है वह क्या उस औरत का बन जाता है? दहेज के चलते स्त्री पर होने वाले अन्याय एवं अत्याचार को लेकर जहीर कुरेशी का कवि मन संवेदनशील होना स्वाभाविक है। वे लिखते है कि दहेज लेनेवाला पुरुष कभी स्त्री मन को समझ ही नहीं सकता। उन्हीं के शब्दों में देखिए -

"लाख रुपए में खरीदा था पिता ने मेरा वर
वो मेरा स्वामी होकर भी पराया है बहुत।"५

भारत की यथार्थ स्थिति को उजागर करते हुए अशोक अंजुम जी स्त्री की उपेक्षा एवं तिरस्कार को व्यक्त करते हैं। "अशोक अंजुम की गज़लों का कैनवास काफी विस्तृत रहा है। इन गज़लों में गरीब की बिटिया की हल्दी, बिछुवे, महावर और कंगना की बातें जहाँ नज़र आती हैं, वहीं बाजार की अस्मत को धज्जी से बिकी में तलाशने की अदा ढूंढनेवालों की भी खास खबर ली गयी है।"६ "उन्हीं के शब्दों में स्त्री-पुरुष भेद देखिये -

चॉकलेट भैया को भाये प्यारी है गुड़धानी बिटिया।
चौका, चूल्हा, झाड़ू, बर्तन भूल गई शैतानी बिटिया।"७

गज़लकार अदम गोंडवी यथार्थवादी गज़लकार है। जो औरत

की इज्जत और सम्मान करना जानते है। औरत को गुलाम समझने वाले पुरुषो की मानसिकता को बदलने की कोशिश अदम गोंडवी अपनी गजलों के माध्यम से करते है। स्त्री तुम्हारे पाँव की जूती नहीं है। वह इस संसार की सुन्दर नहर है। अत: उसके सामने सर झुकाना चाहिए। स्त्री का सम्मान करते हुए अदम गोंडवी कहते है-

"कभी तो अकीदत से सर झुका देना
बड़ी अजीम ये औरत की जात होती है"८

अदम गोंडवी स्त्री पर अन्याय एवं अत्याचार करनेवाली पुरुष प्रधान व्यवस्था को समझाते है कि स्त्री आपके पाँव की जूती नहीं है। जब चाहे निकाल दो और जब चाहे घर में रख लो। पुरुष प्रधान व्यवस्था की मानसिकता पर अदम गोंडवी सीधा प्रहार करते हैं। देखिए उन्ही के शेर में -

"औरत तुम्हारे पाँव की जूती की तरह है
जब बोरियत महसूस हो घर से निकाल दो।"९

सारांश :-

समकालीन हिंदी गजल में स्त्री जीवन के दुख दर्द, एवं पीड़ा को वाणी मिली है। स्त्री जीवन से संबंधित बहुविध समस्याओं को समकालीन हिंदी गजलकारों ने अपनी गजल के माध्यम से अभिव्यक्त कर स्त्री - विमर्श को समृध्द किया है। परंपरागत रुढ़ियों एवं समस्याओं से स्त्री को मुक्त एवं स्वतंत्र करने के लिए समकालीन हिंदी गजल प्रयासरत है।

संदर्भ ग्रंथ :-

१. चंद्रसेन विराट की प्रतिनिधी गज़लें - संपा.डॉ.मधु खराटे, पृ.क्र.६२
२. वही पृ.क्र. १७८
३. वही पृ.क्र. ६८
४. डॉ.उर्मिलेश की गजलें- संपा. नित्यानंद तुषार, पृ. ६२
५.जहीर कुरेशी की चुनिंदा गजलें, सं.मधु खराटे, पृ.क्र. ७१
६. रोशनी का घर, सं.जितेन्द्र जौहर, पृ.क्र. ५७
७. अशोक अंजुम की प्रतिनिधि गजलें, अशोक अंजुम, पृ.क्र. ५९
८. समय से मुठभेड़, अदम गोंडवी, पृ. ५४
९. वही, पृ.क्र. ५६

□□□

50

History of Women in Bengali Literature during Colonial Period

Dr. Banabina Brahma
Principal i/c
Kokrajhar Govt. College

****

Abstract-

Women played a very important role in shaping the history of India. The literature too provides their prominent role and their contribution in the society. During the British Period Bengal Renaissance started from the 19th century to the early 20th century dominated by the Bengali community. Thework highlights the studyof theCharacters played by the women in the literature of Bengal during Colonial Period where women played a very important role not only in the freedom movement or raising their voice against the social norms of the society but also shaping the character of Bengal Renaissance.

Keywords: - Bengal, Renaissance, Literature, Social Norms.

The literature of Bengal not only boost for the renaissance but also portrays history in it. In Bengali literature women are always shown with high spirit. There are many literatures with project women as expert in different fields. The Mymensingh Ballads portrays women expertise in painting and drawing. "Rassundari Devi is among the earliest woman writers in Bengali literature. Her autobiography Amar Jiban (My Life) is known as the first published autobiography in Bengali language. Which portrays the society where social reform had barely touched the lives of upper class/caste women in India.